

शास्त्री-पा

मपसंगादग्रामः

25.05.20
1

आदौ नक्षत्रपुड्डेष्टमाद्विग्रां तत्रक्षत्रावटिथाति वाह—
पादौ मूलं जड्डं च योहिणी जानुनी नषाक्षिन्यः।
अर्थ वामाकाद्यमध्य शुद्धे फलत्रुनीकृतयम् ॥
कादिष्पि च कृतिका पार्श्वं प्रीक्ष्य भवत्ता भवन्ति वदपदः।
कुक्षिष्या देवयो विक्षेपमुरोदन्त्राद्य च ॥
पूर्वं दृष्टि धनिष्ठां शुद्धौ विवाय्वा अमूर्ते कर्ते इत्तः।
अद्युल्लभ्य पुनर्वस्त्राप्तेषां संस्तिष्या नवाः ॥
मीवा ज्येष्ठा श्रवणं श्रवणे पूर्वो मूर्खं विजाः स्वातिः।
दासितं शतभिष्यग्रथ नासिका मध्या सुगात्तिर्ये नेत्रे ॥
विजा उलाटसंस्था शिरे अरण्यः शिरोहठाक्षार्द्धा ।

नक्षत्रपुड्डेष्टमाद्विग्रां कर्वत्यो इपमिष्टद्विः ॥

नक्षत्रपुड्डेष्टमाद्विग्रां के द्वैनों पाँच में मूल, द्वैनों जड्डाओं में योहिणी,
द्वैनों जानुओं में अश्विनी, द्वैनों ऊर्ध्वाओं में पूर्वाषाढ़ा और उत्तर-
षाढ़ा, शुद्धे में पूर्वोक्ताल्पुनी और उत्तरोक्ताल्पुनी, कमर में कृतिका,
द्वैनों पार्श्वं में पूर्ववादपदा और उत्तरवादपदा, पैर में देवती,
द्वाती में अनुरादा, पीठ में वानिष्ठा, द्वैनों शुद्धाओं में विशाया,
द्वैनों हाथों में इत्तः, अंगुलियों में पुनर्वस्त्रा, नखों में आष्टल्लेषा,
गीविका में ज्येष्ठा, द्वैनों कानों में श्रवण, मूर्ख में पुष्य, दृष्टी में
शक्ति, हास्य में शतभिष्य, नासिका में मध्या, द्वैनों आँखों में
मूर्गविष्या, उलाट में विजा, शिर में अरणी रथा कृत्ती में आक्षा
को उचापित करना चाहिये ।

P.T.O

29.03.20
2

कहिमन् काले रुपसजा २०२३ में वर्तं गृहीतव्यमिथ्येतदाह—
चैत्रसंवत् बहुलण्ठे द्वयस्तम्भां मूलसंस्कृते चन्द्रे ।

उपवासः कर्तव्यो विष्णुं सम्पूर्जम् विश्वम् च ॥
यैति शुक्ल अवस्था में यदि मूल नक्षत्र और चन्द्रवार
हो तो उस दिन विष्णु और नक्षत्र की पूजा करके प्रथम
उपवास प्रारम्भ करके तैसे-तैसे दौहिती आदि आसा जप
त्वैर्य-त्वैर्य आकृत करके उपवास करना चाहिये ।

दैत्यमाससंवत् बहुलपक्षे कृष्णण्ठे अवस्थां तिथौ
मूलसंस्कृते चन्द्रे चन्द्रवासरे । मूलं नक्षत्रं तजा यदि जपति
तदिमन् दिने प्रथमत उपवासः कर्तव्यः विष्णुं नायायम्
विष्णुं नक्षत्रं च सम्पूर्जम् च चन्द्रे, तरो यथा यथा दी-
हित्यादीनि नक्षत्राणि भवन्ति तथा तथोपवासः कर्तव्यो
यावदार्थम् । तथा एव शार्गः—

अवस्थां मधुमाससंवत् कृष्णण्ठे तु नैर्श्वर्ण ।

नक्षत्रे चन्द्रवारे तु मुहूर्ते तु गुणान्विते ॥

प्रारम्भेद्वपुसजा २०२३ में वर्तं धर्मायमः पुमान् ।

यैति पूर्णे मनुष्णी रुपशीभामवाञ्छयात् ॥

अथ वर्तार्थं कर्तव्यं तदाह

द्वयाद् व्रते समाप्ते द्वयस्तर्ण आजनं सुवर्णस्तुतम् ।

विष्णुं कालविद्वुग्मे सरजेवस्त्रे स्वशक्त्या च ॥

व्रत समाप्त होने के बाद अपनी शालि के अनुसार
कालका शालाएँ के लिए सुवर्ण, रज और वस्त्रों के साथ
द्वृत ये पूर्ण पञ्च दान छेना चाहिये ।

P.T.O

29.09.20
3

आथ उत्ती कीदूषी अवति —

शारदमलपूर्णचन्द्रघुतिसदृशमुखी सरोजदलनेत्रा ।

कृष्णरहस्याना सुकर्ण ऋमरोदरसनित्रैः केऽर्जैः ॥

पुंसकोक्तिलसमवाणी नाभोयठी पद्मापत्रकर्षणा ।

स्तनगारानतमद्वया प्रदक्षिणावर्तन्त्रा नारया ॥

कर्णलीकार्णनिमोऽसुक्ष्मोयी वरकुकुन्दरा सुनेत्रा ।

सुप्रिलिप्यादुलिलाशा अवति प्रमदा मनुष्यग्रहा ॥

यदि पूर्वोल्ल व्रत की उत्ती के ने शारदीय चन्द्र के समान
मुखकान्ति, कर्मलदल के समान नेत्र, सुन्दर दौत, सुन्दर कान,
आमरोदर के समान केश, पुंसकोक्ति के समान काणी, तथा
वार के समान ओंठ, कर्मल के समान डाढ़ और पाँख, स्तनों के
गारु से नत मध्य आग, दक्षिणावर्त नाभियों से ग्रुत, केले के
खम्बों के समान तंक, सुन्दर निवर्षकरूप, द्वासामीष्या और शिली
दुई ऊँगुलियों से ग्रुत पाँख जाली ठोती है। इसी तरह इस व्रत
को करने के पुरुष नी होता है।

शारदमलपूर्णचन्द्रघुतिसदृशमुखी, शारदकोले शोडायाकाले
निर्मलः, पूर्णचन्द्रः शब्दी, तद्वय द्युतिः कान्तिः । नरसदृशं मुखं
वद्वनं वद्याः । सरोजदलनेत्रा पद्मपत्रसदृशाद्धी । कृष्णरहस्याना
सुकर्णोभनव्युक्तलदलता । सुकर्ण शोभनकर्ण । केऽर्जैमूर्ख्यैर्मरो-
दरसनित्रैः कृष्णरेफजठरकानितित्रिः । अतिनीलवर्णैर्विर्यः ।

डॉ. सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (उत्तीतिष्ठ)
२०३० सं. महाविंशु शुभसेना,
पुर्णिमा ।